International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 07-03-2025, Accepted: 06-04-2025, Published: 22-04-2025
Volume 11, Issue 2, 2025, Page No. 16-18

विनोद कुमार शुक्ल के उपन्यास 'दीवार में एक खिड़की रहती थी' के काव्यात्मक निर्माण पर विवेचना

वांग ली
व्याख्याता, हिंदी विभाग, युन्नान विश्वविद्यालय, युन्नान प्रांत, चीन

सारांश
'दीवार में एक खिड़की रहती थी' हिंदी के आधुनिक काव्यात्मक उपन्यासों के प्रणेता विनोद कुमार शुक्ल की प्रतिनिधि रचना है, जिसने भारत में और विदेशों में साहित्यिक प्रशंसा अर्जित की है। यह शोधपत्र उपन्यास की काव्यात्मक संरचना का विश्लेषण करता है —— इसका अध्याय–विन्यास, भाषा की काव्यात्मक प्रकृति, बिम्बों का विचित्रीकरण और काव्यात्मक जीवन दर्शन। यह दर्शाता है कि कैसे शुक्ल ने काव्यात्मक तकनीकों के माध्यम से पाठकों को समृद्ध भावनात्मक अनुभव और गहन विचार प्रदान किए हैं, जिससे पाठक प्रकृति की सुंदरता और मानवीय गरिमा में काव्यात्मक सौंदर्यानुभूति प्राप्त करते हैं।

मूल शब्दः विनोद कुमार शुक्ल, दीवार में एक खिड़की रहती थी, काव्यात्मक निर्माण

हिंदी साहित्य जगत में, जब अधिकांश युवा उपन्यासकारों की कृतियाँ अपेक्षाकृत रूढ़िगत और पुरानी प्रतीत होती हैं, तब कवि विनोद कुमार शुक्ल ने कविता के अतिरिक्त साहित्य के अन्य रूपों में भी अपनी सृजनशीलता का विस्फोट कर हिंदी उपन्यास लेखन को नई ऊर्जा और नवीनता प्रदान की है101। उनका प्रतिनिधि उपन्यास 'दीवार में एक खिड़की रहती थी' (1997) गहन काव्यात्मकता और दार्शनिक चिंतन का एक कलात्मक मिश्रण है, जिसने भारत और विदेशों में व्यापक प्रशंसा प्राप्त की है।

'दीवार में एक खिड़की रहती थी' (1997) एक भारतीय कस्बे में रहने वाले एक साधारण दंपति की कहानी है। वे एक खिड़की के माध्यम से प्राकृतिक तत्वों से भरी एक जादुई दुनिया में प्रवेश करते हैं, जो उनके जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा बन जाती है, जबकि व्यस्त लोग इस अनुभव से वंचित रहते हैं। इस उपन्यास में कोई भव्य कथानक नहीं है, बल्कि यह दैनिक जीवन में छिपी काव्यात्मकता को उजागर करता है और यह उपन्यास साधारण जीवन के असाधारण महत्व को बताते हुए, व्यक्ति और पर्यावरण, इतिहास और समय के संबंधों की खोज करता है, जो व्यक्तिगत जीवन की शाश्वत मूल्यों की खोज को दर्शाता है2।

यह शोधपत्र 'दीवार में एक खिड़की रहती थी' में काव्यात्मक संरचना के चार प्रमुख पहलुओं का विश्लेषण करेगाः काव्यात्मक उपन्यास की संरचनात्मक डिजाइन, भाषा के काव्यिकरण की प्रक्रिया और अर्थ, उपन्यास के बिम्बों का विचित्रीकरण और काव्यात्मक जीवन दर्शन।

1. काव्यात्मक उपन्यास की संरचनात्मक डिजाइन

शुक्ल ने 'दीवार में एक खिड़की रहती थी' की संरचना एक अध्याय–वार कथात्मक लंबी कविता के रूप में डिज़ाइन की है। पूरे कार्य के विषय की पूर्व घोषणा करने वाली उद्घाटन कविता के बाद, उपन्यास छह अध्यायों में विभाजित है, और प्रत्येक अध्याय के शुरू में कविता की पंक्तियाँ उस अध्याय के काव्यात्मक सारांश की तरह दिखाई देती हैं।

प्राचीन भारतीय काव्य परंपरा में, महाकाव्यों के प्रारंभ में आशीर्वचन या मंगलाचरण का विधान रहा है, जो कथा के मूल भाव को संकेतित करता है। शुक्ल ने इस परंपरा का आधुनिक रूपांतरण किया है, जहां उनकी कविताएँ न केवल अध्यायों के सारांश प्रस्तुत करती हैं, बल्कि पाठकों को एक विशिष्ट मनोदशा में भी प्रवेश कराती हैं।

सम्पूर्ण उपन्यास की प्रारंभिक कविता 'उपन्यास में पहले एक कविता रहती थी'उपन्यास के केंद्रीय विषय की घोषणा करती है । कविता में वर्णित असंख्य तारों में से एक तारा, एक हवा, एक लहर आदि प्रतीक, समूह में व्यक्ति की विशिष्टता और प्रकटन का प्रतीक हैं; और ''क्षणिक रूप से पहला बन गया'', ''अस्थायी रूप से आगे'' और ''क्षणभंगुर'' जैसे प्रतीक जीवन की क्षणिकता और परिवर्तनशीलता को दर्शाते हैं, जबकि अंतिम पंक्ति ''आजीवन साथी'' एक शाश्वत विषय की ओर मुड़ती है, जो स्थायी प्रेम और साथ का प्रतीक है, जिससे पूरे उपन्यास में शाश्वत मूल्यों की खोज की जाती है; दूसरा, यह कविता ''आजीवन साथी'' की अवधारणा का उल्लेख करके, उपन्यास के पात्रों के बीच संबंधों की पृष्ठभूमि तैयार करती है, और अप्रत्यक्ष रूप से मुख्य पात्र रघुवर प्रसाद और उनकी पत्नी सोंशी के बीच गहरे संबंध की ओर इशारा करती है; तीसरा, प्रारंभिक कविता अपनी संक्षिप्त और दोहराव वाली संरचना के माध्यम से और प्रतीकात्मक भाषा के साथ, एक काव्यात्मक विश्वदृष्टि का निर्माण करती है, जो उपन्यास में व्यापक रूप से प्रयुक्त काव्यात्मक भाषा का संकेत देती है, और पूरी कृति के वातावरण की नींव रखती है। इसके अलावा, यह कविता पाठकों के लिए काव्यात्मक सौंदर्य की अपेक्षा भी स्थापित करती है, जिससे पाठक पढ़ने की प्रक्रिया में इस सौंदर्यानुभूति को बनाए रख सकते हैं।

प्रारंभिक कविता द्वारा बनाए गए काव्यात्मक माहौल के अलावा, उपन्यास के प्रत्येक अध्याय की कविताएँ भी उस अध्याय के मुख्य विषय को संक्षेप में प्रस्तुत करती हैं, साथ ही पाठकों को संबंधित भावनात्मक स्थान में प्रवेश कराती हैं, जिससे उपन्यास की लय और भावनात्मक गहराई पारंपरिक कविता के अनुरूप हो जाती है, और साथ ही उपन्यास के विषय की अभिव्यक्ति को मजबूत करती है और टेक्स्ट के प्रतीकात्मक अर्थ को बढ़ाती है3। इस प्रकार, प्रारंभिक कविता और प्रत्येक अध्याय के काव्यात्मक सारांश पूरे उपन्यास के लिए एक बहुस्तरीय काव्यात्मक ढांचा बनाते हैं।

उल्लेखनीय है कि यह अनूठी उपन्यास संरचना शेखर के अपने लेखन पर गहन विचार और रूप में सचेत खोज को दर्शाती है। उनके एक अन्य उपन्यास 'नौकर की कमीज' 4(1979) में भी इसी तरह की संरचना का उपयोग किया गया है। यह संरचनात्मक रणनीति सतही रूप से बिखरी हुई और तुच्छ लगने वाली कथावस्तु को एक सावधानीपूर्वक डिज़ाइन किए गए ढांचे में समाहित करती है, जो न केवल उपन्यास को एक स्पष्ट संरचना और तार्किकता प्रदान करती है, बल्कि इसे कविता जैसी औपचारिक सुंदरता भी प्रदान करती है।

2. भाषा के काव्यिकरण की प्रक्रिया और अर्थ

'दीवार में एक खिड़की रहती थी' में, शुक्ल ने शब्दविन्यास और वाक्यविन्यास साधनों के माध्यम से भाषा का सूक्ष्म प्रयोग किया है, जिससे टेक्स्ट की भाषा काव्यात्मक बन गई है। यह उपन्यास के रूप और सामग्री के बीच एक आंतरिक सामंजस्य स्थापित करता है, और उपन्यास को एक विशिष्ट काव्यात्मक शैली प्रदान करता है, साथ ही पाठकों को कविता पढ़ने के समान गहराई का अनुभव करने और चिंतन करने के लिए प्रेरित करता है।

जैसे दूसरे अध्याय में जब रघुवार प्रसाद और सोनसी खिड़की से बाहर निकलकर तालाब में स्नान करने जाते हैं और रघुवार प्रसाद सोनसी का पीछा करते हैं5, तब लेखक ने अनुप्रास, पुनरावृत्ति, अनुवृत्ति, प्रत्यक्ष उद्धरण, संभावित मूड, उपवाक्य संरचना (कर्म उपवाक्य के भीतर कर्म उपवाक्य, परिणाम क्रिया विशेषण उपवाक्य आदि), समानांतर संरचना, विपरीत संरचना, लंबे और छोटे वाक्यों का वैकल्पिक उपयोग, हिंदी के सामान्य पूर्णकालिक (अतीत), पूर्व पूर्णकालिक (अतीत का अतीत) और अतीत प्रगतिशील आदि का उपयोग किया है।

इन शब्दविन्यास और वाक्यविन्यास साधनों के संयोजन ने टेक्स्ट की प्रवाहशीलता और लयबद्धता को उल्लेखनीय रूप से बढ़ाया है, और प्रत्येक काव्यात्मक इकाई के कथात्मक स्तर और भावनात्मक गहराई को गहरा किया है। साड़ी, दौड़ने की क्रिया, पृथ्वी, पंख, हवा, आकाश आदि आत्मनिष्ठ और वस्तुनिष्ठ बिम्बों को एकीकृत करके, यह टेक्स्ट पाठकों के लिए एक दृश्यात्मक गतिशीलता और भावनात्मक समृद्धि से भरा दृश्य बनाता है, जिससे पाठक पुरुष पात्र की अपनी पत्नी सोनसी के प्रति गहरी चिंता और विछोह के भय को व्यापक रूप से महसूस कर सकते हैं।

टेक्स्ट में वर्णित वह शक्ति जो लगभग सोनसी को ले जाती है, अस्तित्व और विलुप्ति के बीच तनावपूर्ण संबंध, आने वाले परिवर्तन या हानि की आशंका और चिंता का संकेत देती है। मानव जीवन की अनिश्चितता और मानवीय संबंधों की भंगुरता की यह गहरी समझ पाठकों के अपने अनुभवों के साथ प्रतिध्वनित होती है, जो टेक्स्ट की भावनात्मक प्रतिध्वनि और सार्वभौमिकता को और बढ़ाती है।

इस प्रकार, यह टेक्स्ट ''अनित्यता और शाश्वतता'' के विषय को गहरा करने के साथ–साथ, अपनी मजबूत प्रभावशीलता और सार्वभौमिक प्रासंगिकता के साथ, पाठकों को एक काव्यात्मक सौंदर्य अनुभव प्रदान करता है।

3. उपन्यास के बिम्बों का विचित्रीकरण

रूसी औपचारिकतावादी सिद्धांतकार श्क्लोवस्की के अनुसारः ''कला की तकनीक वस्तु को 'अपरिचित' बनाना है, रूप को कठिन बनाना है, अवधारणा की कठिनाई और समय की अवधि को बढ़ाना है, क्योंकि अवधारणा प्रक्रिया स्वयं एक सौंदर्यपरक उद्देश्य है, जिसमें समय को लंबा करना आवश्यक है।''6'दीवार में एक खिड़की रहती थी' में, शुक्ल दैनिक जीवन के दृश्यों और परिस्थितियों का वर्णन करते समय गैर–पारंपरिक दृष्टिकोण और विवरण का उपयोग करते हैं, जिससे परिचित प्राकृतिक दृश्य और पात्र अपरिचित लगते हैं, जो पाठकों की नियमित धारणा और ज्ञान को चुनौती देते हैं।

उदाहरण के लिए, जब सोनसी तालाब के किनारे कपड़े धोने की तैयारी करती है, तो शुक्ल उसे "तत्काल हृदय में हुए उलकापात के पत्थर की गढ़ी प्रतिमा"7 के रूप में चित्रित किया है, यह अपरिचितता महिला सौंदर्य के पारंपरिक भारतीय वर्णनों से अलग है, जो आमतौर पर लक्ष्मी, कमल, बादल, मोर, हिरण जैसे प्रतीकों का उपयोग करते हैं। उल्कापिंड की कठोरता और अचानक गिरने का प्रभाव पुरुष पात्र पर सोनसी के मजबूत मनोवैज्ञानिक प्रभाव को व्यक्त करता है। साथ ही, टेक्स्ट में उल्लेख है कि ''दूर से गर्म लगता था'', जो इस कठोरता में भावनात्मक गर्मी जोड़ता है।

अधिक उल्लेखनीय है कि लेखक ने इस उल्कापिंड के स्रोत को चंद्रमा या बृहस्पति से जोड़कर,एक साधारण दैनिक दृश्य को ब्रह्मांडीय स्तर की कल्पना तक उठाकर इसे एक रहस्यमय और महान अर्थ वाले दृश्य में बदल दिया है। यह रूपांतरण न केवल कार्य के प्रतीकात्मक अर्थ को बढ़ाता है, बल्कि पाठकों को इस साधारण दृश्य के प्रति नए विचार और भावनाएँ भी प्रदान करता है।

तालाब के वर्णन में भी शुक्ल विचित्रीकरण का प्रयोग करते हैं। वे लिखते हैंः "कम गहरी, बहते हुए तल की नदी थी। कई तलों की सतहों से नदी गहरी होती है। इस नदी का तल सबसे नीचे का तल था। केवल यही तल और ऊपर कोई तल नहीं। यह गहराई का तल था, पर तल गहरा नहीं था। सभी तालाबों का जल धरती के समतल था। पर तालाब गहरे थे। यह सारी जगह रघुवर प्रसाद के मन की जगह थी।"7

इस अंश में एक साधारण स्थलाकृति का वर्णन एक दार्शनिक चिंतन में बदल जाता है। ''तल'' शब्द की बार–बार पुनरावृत्ति (लगभग सात बार) एक ऐसा लयात्मक प्रभाव पैदा करती है जो विचार की गहराई का अनुभव कराता है। नदी और तालाब का यह वर्णन केवल भौगोलिक नहीं है, बल्कि मानवीय अनुभव का एक रूपक भी है। नदी का उथला तल और तालाब की गहराई दो प्रकार के अस्तित्व या अनुभव को दर्शाते हैंदृएक गतिशील परंतु सतही, दूसरा स्थिर परंतु गहरा। अंतिम वाक्य, जो इस जगह को रघुवर प्रसाद के ''मन की जगह'' के रूप में पहचानता है, स्पष्ट करता है कि यह भौतिक परिदृश्य वास्तव में एक मानसिक परिदृश्य का रूपक है।

विचित्रीकरण के माध्यम से, शुक्ल के बिम्ब न केवल अद्भुत और आश्चर्यजनक बन जाते हैं, बल्कि वे जीवन की गहरी सच्चाइयों को भी उजागर करते हैं। वे दर्शाते हैं कि कैसे हमारे दैनिक अनुभव, यदि ध्यान से देखे जाएं, तो गहरे अर्थ से भरे हो सकते हैं। इस तरह, उनके बिम्ब केवल सौंदर्यात्मक उपकरण नहीं रह जाते, बल्कि जीवन के प्रति एक नवीन दृष्टिकोण प्रदान करने का माध्यम बन जाते हैं8।

4. काव्यात्मक जीवन दर्शन

'दीवार में एक खिड़की रहती थी' पूरी पुस्तक में लेखक के जीवन और मृत्यु, अस्तित्व और समय के दार्शनिक विचारों से परिपूर्ण है, जो उपन्यास को एक जैविक इकाई बनाती है। यह जीवन की सुंदरता की प्रशंसा करते हुए, जीवन के अर्थ और मानव की शाश्वतता की खोज पर गहराई से विचार करती है।

पिता और पुत्र के बीच निम्नलिखित संवाद द्वारा जीवन की सुंदरता और मृत्यु की अनिवार्यता पर गहराई से चर्चा की जाती है, जो जीवन के प्रति उनके सम्मान और मृत्यु के प्रति उनकी स्वीकृति को दर्शाता हैः

पिता कहते हैंः ''यहाँ जीवन इतना अच्छा लग रहा है कि लगता है बहुत जी गए और मृत्यु यहाँ से बहुत समीप हो।''

पुत्र उत्तर देता हैरू ''इतना अच्छा की बहुत जीने के बाद भी बचा हुआ है। मृत्यु यहाँ से पास हो परंतु वहाँ तक पहुँचने में बहुत देर लगेगी।''

पिता फिर प्रश्न करते हैंः ''ठीक कहती हो देर का जीवन बचा है। क्या हम यहाँ से मृत्यु को देख सकते हैं।''9

पुत्र के अंतिम उत्तर में शुक्ल का जीवन दर्शन स्पष्ट होता हैः ''बच्चे जीवन को देख लेने के बाद फुरसत मिलेगी तब। जीवित आँख से मृत्यु नहीं जीवन दिखता है।''

''जीवित आँख से मृत्यु नहीं जीवन दिखता है'' यह कथन जीवन के निरंतर अस्तित्व की आशा और जीवन के हर पल के प्रति सम्मान को दर्शाता है। यह न केवल जीवन अवधारणा में

अतिक्रमणशीलता पर ज़ोर देता है, बल्कि जीवन और मृत्यु के प्रति भारतीय संस्कृति के दार्शनिक समझ को भी दर्शाता है, जो हिंदू धर्म में जीवन और मृत्यु के प्रति दृष्टिकोण से मेल खाता है – जीवन और मृत्यु प्राकृतिक चक्र हैं, मृत्यु अंत नहीं बल्कि नए जीवन की शुरुआत है, जब तक कि हिंदू धर्म के अनुयायियों के जीवन का अंतिम लक्ष्य ''मोक्ष'' प्राप्त न हो जाए10।

उपन्यास में पात्रों की जीवन के प्रति समझ और अस्तित्व और मृत्यु के प्रति उनकी पहचान, एक क्रमिक ''प्रस्थान'' विशेषता दिखाती है, जो शारीरिक जीवन का अंत है, लेकिन अधिक महत्वपूर्ण रूप से आत्मा और स्मृति की अनंतता है। यह ''प्रस्थान'' की अवधारणा उपन्यास में पिता और पुत्र के बीच संवाद, भिक्षु के निधन आदि प्रसंगों द्वारा कुशलता से दर्शाई गई है, जो हिंदू धर्म में जीवन चक्र के विश्वास को प्रतिबिंबित करती है, अर्थात जीवन सिर्फ समाप्त नहीं होता, बल्कि रूपांतरित होता है और जारी रहता है।

उपन्यास में रघुवर प्रसाद और सोनसी का प्रेम भी इस काव्यात्मक जीवन दर्शन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह प्रेम केवल दो व्यक्तियों के बीच का संबंध नहीं है, बल्कि एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा वे जीवन की गहरी समझ प्राप्त करते हैं। प्रेम उन्हें खिड़की के माध्यम से प्रकृति की जादुई दुनिया में प्रवेश करने की शक्ति देता है – एक ऐसी दुनिया जिसे शुक्ल ने काव्यात्मक रूप से वर्णित किया है, उस खिड़की के पार जो दुनिया थी, वह सिर्फ प्रकृति का एक दृश्य नहीं थी, बल्कि एक ऐसा आयाम था जहाँ समय का प्रवाह अलग था, जहाँ हर पत्ता, हर पक्षी, और हर लहर एक गहरे अर्थ से ओतप्रोत थी11। वहाँ जाने का अर्थ था अपने अस्तित्व के सच्चे स्वरूप को जानना। खिड़की एक रूपक बन जाती है जो साधारण जीवन और गहरे आध्यात्मिक अनुभव के बीच की सीमा को दर्शाती है। प्रेम के माध्यम से, रघुवर प्रसाद और सोनसी इस सीमा को पार कर सकते हैं और जीवन के सच्चे अर्थ को समझ सकते हैं।

निष्कर्ष

विनोद कुमार शुक्ल का 'दीवार में एक खिड़की रहती थी' अपने अध्याय–वार काव्य संरचना के साथ हिंदी के पारंपरिक उपन्यास के कथात्मक पैटर्न को नवीनीकृत करता है, और सावधानीपूर्वक डिज़ाइन की गई भाषा और बिम्बों के माध्यम से, दैनिक जीवन के साधारण दृश्यों को गहरे अर्थ वाले काव्यात्मक अभिव्यक्तियों में बदल देता है। ये काव्यात्मक निर्माण न केवल टेक्स्ट के सौंदर्य और भावनात्मक गहराई को बढ़ाते हैं, बल्कि समय, स्मृति, अस्तित्व, अलगाव और शाश्वतता जैसे सार्वभौमिक विषयों की खोज करते समय, उपन्यास को अद्वितीय दार्शनिक गहराई और कलात्मक मूल्य प्रदान करते हैं।

संदर्भ ग्रंथः

1. शुक्ल वीके. दीवार में एक खिड़की रहती थी. वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2002, अनुकथन
2. भारद्वाज ए, 'दीवार में एक खिड़की रहती थी' साधारण जीवन का उत्सव मनाती है. द वायर, अक्टूबर 08, 2023
3. सोनी के. विनोद कुमार शुक्ल की 'उपन्यास कला' का वैशिष्ट्य. रिसर्च रेइन्फोर्समेन्ट, वॉल्यूम 8, अंक 2, 2021, पृष्ठ 20–23
4. शुक्ल वीके. नौकर की क़मीज़. संभावना प्रकाशन, हापुड़, 1994
5. शुक्ल वीके. दीवार में एक खिड़की रहती थी. वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2002, पृष्ठ 41–42
6. शक्लोव्स्की वी. कला एक प्रक्रिया के रूप में, संपादक. हु जे, बीसवीं सदी के पश्चिमी साहित्यिक सिद्धांतों का चयनरू खंड द्वितीय. चाइना सोशल साइंसेज प्रेस, बीजिंग, 1986
7. शुक्ल वीके. दीवार में एक खिड़की रहती थी. वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2002, पृष्ठ 35
8. छियान जेआर. ''साहित्यिकता'' और ''अपरिचितीकरण'' – रूसी रूपवाद के प्रारंभिक दो सिद्धांत स्तंभ. विदेशी साहित्य समीक्षा, अंक 1, 1989, पृष्ठ 26–32
9. शुक्ल वीके. दीवार में एक खिड़की रहती थी. वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2002, पृष्ठ 58
10. काकर एस, काकर के. द इंडियंसरू पोर्ट्रेट ऑफ़ ए पीपल. पेंगुइन बुक्स इंडिया, हरियाणा, 2007, पृष्ठ 128–133
11. रविन्थिरन वी. ड्रीमिंग द वर्ल्डरू विनोद कुमार शुक्लाश्ज़ एक्स्ट्राऑर्डिनरी सेंटेन्सेज़. द जॉर्जिया रिव्यू, वॉल्यूम 74, अंक 3 (शरद 2020), पृष्ठ 753–767